चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	11.12.25	3	5-6

देश में 120 मिलियन मधुमक्खी कॉलोनियां स्थापित करने की क्षमता : डॉ. राजबीर गर्ग

हकृवि में 21 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सीएएफटी का समापन

भास्कर न्यूज | हिसार

प्रशिक्षण में भाग लेने वालों को प्रमाणपत्र प्रदान करते डॉ. राजबीर गर्ग।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'मधुमक्खियों एवं स्वदेशी परागणकों की जीव विज्ञान, पालन एवं प्रबंधन' विषय पर 21 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सीएएफटी का समापन हुआ। इस प्रशिक्षण में देश के विभिन्न नौ राज्यों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। समापन समारोह में विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित रहे।

डॉ. राजबीर गर्ग ने कहा कि हमारे देश में मधुमक्खी पालन की अपार संभावनाएं हैं, क्योंकि लगभग 70 प्रतिशत पुष्प संसाधन अभी भी उपयोग में नहीं लाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश में 120 मिलियन मधुमक्खी कॉलोनियां स्थापित करने की क्षमता है। मधुमक्खी पालन के लिए वर्तमान में 3.5 मिलियन कॉलोनियां ही उपलब्ध हैं, जो परागण आवश्यकताओं की दृष्टि से अत्यंत कम है। उन्होंने बताया कि परागण से प्राप्त अप्रत्यक्ष लाभ, शहद और मोम के मूल्य से 10 से 15 गुना अधिक होते हैं। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	11-12-25	2	7-8

देश में 120 मिलियन मधुमक्खी कालोनियां स्थापित करने की क्षमताः डॉ. राजबीर

हकृवि में 'मधुमक्खियों एवं स्वदेशी परागणकों की जीव विज्ञान, पालन एवं प्रबंधन' विषय पर प्रशिक्षण संपन्न

मुख्य अतिथि प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित करते हुए

हिसार, 10 दिसम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'मधुमक्खियों एवं स्वदेशी परागणकों की जीव विज्ञान, पालन एवं प्रबंधन' विषय पर 21 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन हुआ। इस प्रशिक्षण में देश के विभिन्न नौ राज्यों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। समापन समारोह में विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित रहे।

डॉ. राजबीर गर्ग ने अपने सम्बोधन में कहा कि हमारे देश में मधुमक्खी पालन की अपार संभावनाएं हैं, क्योंकि लगभग 70 प्रतिशत पुष्प संसाधन अभी भी उपयोग में नहीं लाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश में 120 मिलियन मधुमक्खी कालोनियां स्थापित करने की क्षमता है। मधुमक्खी पालन के लिए वर्तमान में 3.5 मिलियन कालोनियां ही उपलब्ध हैं, जो परागण आवश्यकताओं की दृष्टि से अत्यंत कम है।

उन्होंने बताया कि परागण से प्राप्त अप्रत्यक्ष लाभ, शहद और मोम के मूल्य से 10 से 15 गुना अधिक होते हैं।

उन्होंने प्रतिभागियों से आह्वान करते हुए कहा कि वे यहां अर्जित ज्ञान का उपयोग वैज्ञानिक तरीके से मधुमक्खी पालन, परागणक संरक्षण तथा किसानों की आय में बढ़ौतरी करने में लगाएं। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए। समापन अवसर पर प्रशिक्षण संयोजक डॉ. दीपिका कलकल, डॉ मनोज कुमार जाट, डा. विजय कुमार मिश्रा तथा विभाग के सभी कीट वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	11.12.25	4	7-8

देश में 120 मिलियन मधुमक्खी कालोनियां स्थापित करने की क्षमता

प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित करते मुख्य अतिथि डा. राजबीर गर्ग • विज्ञप्ति

हिसार • विज्ञप्ति : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मधुमक्खियों एवं स्वदेशी परागणकों की जीव विज्ञान, पालन एवं प्रबंधन विषय पर 21 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम (सीएएफटी) का समापन हुआ। इस प्रशिक्षण में देश के विभिन्न नौ राज्यों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। समापन समारोह में विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ राजबीर गर्ग मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित रहे। डा. राजबीर गर्ग ने अपने सम्बोधन में कहा कि हमारे देश में मधुमक्खी पालन की अपार संभावनाएं हैं, क्योंकि लगभग 70 प्रतिशत पुष्प संसाधन अभी भी उपयोग में नहीं लाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश में 120 मिलियन मधुमक्खी कालोनियां स्थापित करने की क्षमता है। मधुमक्खी पालन के लिए वर्तमान में 3.5 मिलियन कालोनियां ही उपलब्ध हैं, जो परागण आवश्यकताओं की दृष्टि से अत्यंत कम है। उन्होंने बताया कि परागण से प्राप्त अप्रत्यक्ष लाभ, शहद और मोम के मूल्य से 10 से 15 गुना अधिक होते हैं। इस अवसर पर डा. सुनीता यादव, डा. दीपिका कलकल, डा. मनोज कुमार जाट, डा. विजय कुमार मिश्रा मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	11.12.25	4	2-4

देश में 120 मिलियन मधुमक्खी कॉलोनियां स्थापित करने की क्षमता : डॉ. राजबीर गर्ग

एचएयू में मधुमक्खियों एवं स्वदेशी परागणकों पर प्रशिक्षण संपन्न

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मधुमक्खियों एवं स्वदेशी परागणकों की जीव विज्ञान, पालन एवं प्रबंधन विषय पर आयोजित 21 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम (सीएएफटी) का बुधवार को समापन हुआ। प्रशिक्षण में देश के नौ राज्यों से प्रतिभागियों ने भाग लिया। समापन समारोह में विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग मुख्य अतिथि रहे।

प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित करते मुख्य अतिथि। स्रोत : संस्थान

डॉ. गर्ग ने कहा कि भारत में मधुमक्खी पालन की अपार संभावनाएं हैं, क्योंकि देश के लगभग 70 प्रतिशत पुष्प संसाधनों का अभी भी पूर्ण उपयोग नहीं हो रहा। उन्होंने बताया कि देश में 120 मिलियन मधुमक्खी कॉलोनियां स्थापित करने की क्षमता है, जबकि वर्तमान में मात्र 3.5 मिलियन कालोनियां ही उपलब्ध हैं, जो परागण आवश्यकताओं की दृष्टि से बेहद कम हैं।

उन्होंने कहा कि परागण से मिलने वाला अप्रत्यक्ष लाभ, शहद और मोम की तुलना में 10 से 15 गुना अधिक होता है। उन्होंने प्रतिभागियों से आह्वान किया कि वे यहां प्राप्त ज्ञान का उपयोग वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन, परागणक संरक्षण और किसानों की आय बढ़ाने में करें। समारोह में प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए गए।

विशिष्ट अतिथि एवं कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने कहा कि प्रतिभागी अपने क्षेत्र में किसानों को मधुमक्खी पालन को अपनाने के लिए प्रेरित करें, जिससे उनकी आय में वृद्धि हो सके। कीट विज्ञान विभाग की अध्यक्षा एवं कोर्स निदेशक डॉ. सुनीता यादव ने केंद्र द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों की जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि विभाग अब तक 38 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर चुका है, जिनमें देश के विभिन्न राज्यों से 678 प्राध्यापकों ने भाग लेकर कीट विज्ञान के सामयिक विषयों में प्रशिक्षण प्राप्त किया है। समापन अवसर पर प्रशिक्षण संयोजक डॉ. दीपिका कलकल, डॉ. मनोज कुमार जाट, डॉ. विजय कुमार मिश्रा सहित विभाग के सभी कीट वैज्ञानिक मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	11-12-25	12	2-5

हकृवि में प्रशिक्षण संपन्न, दिखा उत्साह

मधुमक्खी पालन में अपार संभावनाएं: गर्ग

देश में 120 मिलियन मधुमक्खी कालोनियां स्थापित करने की क्षमता

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित करते मुख्य अतिथि। फोटो:हरिभूमि

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'मधुमक्खियों एवं स्वदेशी परागणकों की जीव विज्ञान, पालन एवं प्रबंधन' विषय पर 21 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम (सीएएफटी) का समापन हुआ। इस प्रशिक्षण में देश के विभिन्न नौ राज्यों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। समापन समारोह में विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग मुख्य अतिथि रहे।

डॉ. राजबीर गर्ग ने इस अवसर कहा कि हमारे देश में मधुमक्खी पालन की अपार संभावनाएं हैं, क्योंकि लगभग 70 प्रतिशत पुष्प संसाधन अभी भी उपयोग में नहीं लाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश में 120 मिलियन मधुमक्खी कालोनियां स्थापित करने की क्षमता है। मधुमक्खी पालन के लिए वर्तमान में 3.5 मिलियन कालोनियां ही उपलब्ध हैं, जो परागण आवश्यकताओं की दृष्टि से अत्यंत कम है। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए।

यह रहे मौजूद

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने प्रतिभागियों से कहा कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में मधुमक्खी पालन के व्यवसाय को अपनाने के लिए किसानों को प्रेरित करें। समापन अवसर पर कीट विज्ञान विभाग की अध्यक्षा एवं कोर्स निदेशक डॉ. सुनीता यादव, प्रशिक्षण संयोजक डॉ. दीपिका कलकल, डॉ मनोज कुमार जाट, डा. विजय कुमार मिश्रा तथा विभाग के सभी कीट वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	11.12.25	5	6-8

देश में 120 मिलियन मधुमक्खी कालोनियां स्थापित करने की क्षमता : डॉ. राजबीर गर्ग

हकृवि में 'मधुमक्खियों एवं स्वदेशी परागणकों की जीव विज्ञान, पालन एवं प्रबंधन' विषय पर प्रशिक्षण संपन्न

हिसार, 10 दिसम्बर (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'मधुमक्खियों एवं स्वदेशी परागणकों की जीव विज्ञान, पालन एवं प्रबंधन' विषय पर 21 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम (सीएएफटी) का समापन हुआ। इस प्रशिक्षण में देश के विभिन्न नौ राज्यों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। समापन समारोह में विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग मुख्यातिथि के तौर पर उपस्थित रहे।

मुख्यातिथि प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित करते हुए

डॉ. राजबीर गर्ग ने अपने सम्बोधन में कहा कि हमारे देश में मधुमक्खी पालन की अपार संभावनाएं हैं, क्योंकि लगभग 70 प्रतिशत पुष्प संसाधन अभी भी उपयोग में नहीं लाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश में 120 मिलियन मधुमक्खी कालोनियां स्थापित करने की क्षमता है। मधुमक्खी पालन के लिए वर्तमान में 3.5 मिलियन कालोनियां ही उपलब्ध हैं, जो परागण आवश्यकताओं की दृष्टि से अत्यंत कम है। उन्होंने बताया कि परागण से प्राप्त अप्रत्यक्ष लाभ, शहद और मोम के मूल्य से 10 से 15 गुना अधिक होते हैं। उन्होंने प्रतिभागियों से आह्वान करते हुए कहा कि वे यहां अर्जित ज्ञान का उपयोग वैज्ञानिक तरीके से मधुमक्खी पालन, परागणक संरक्षण तथा किसानों की आय में बढ़ोतरी करने में लगाएं। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस के पाहुजा ने प्रतिभागियों से कहा कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में मधुमक्खी पालन के व्यवसाय को अपनाने के लिए किसानों को प्रेरित करें ताकि उनकी आमदनी में बढ़ोतरी हो सके। कीट विज्ञान विभाग की अध्यक्षा एवं कोर्स निदेशक डॉ. सुनीता यादव ने केंद्र द्वारा संचालित की जा रही विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। समापन अवसर पर प्रशिक्षण संयोजक डॉ. दीपिका कलंकल, डॉ. मनोज कुमार जाट, डा. विजय कुमार मिश्रा तथा विभाग के सभी कीट वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	10.12.2025	--	--

देश में 120 मिलियन मधुमक्खी कॉलोनियां स्थापित करने की क्षमता

हकृवि में 'मधुमक्खियों एवं स्वदेशी परागणकों की जीव विज्ञान, पालन एवं प्रबंधन' विषय पर प्रशिक्षण संपन्न

मुख्य अतिथि प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित करते हुए

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'मधुमक्खियों एवं स्वदेशी परागणकों की जीव विज्ञान, पालन एवं प्रबंधन' विषय पर 21 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम (सीएएफटी) का समापन हुआ। इस प्रशिक्षण में देश के विभिन्न नौ राज्यों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। समापन समारोह में विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ राजबीर गर्ग मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित रहे।

डॉ. राजबीर गर्ग ने अपने सम्बोधन में कहा कि हमारे देश में मधुमक्खी पालन की अपार संभावनाएं हैं, क्योंकि लगभग 70 प्रतिशत पुष्प संसाधन अभी भी उपयोग में नहीं लाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश में 120 मिलियन मधुमक्खी कालोनियां स्थापित करने की क्षमता है। मधुमक्खी पालन के लिए वर्तमान में 3.5 मिलियन कालोनियां ही उपलब्ध हैं, जो परागण आवश्यकताओं की दृष्टि से अत्यंत कम है। उन्होंने बताया कि परागण से प्राप्त अप्रत्यक्ष लाभ, शहद और मोम के मूल्य से 10 से 15 गुना अधिक होते हैं। उन्होंने प्रतिभागियों से आह्वान करते हुए कहा कि वे यहां अर्जित ज्ञान का उपयोग वैज्ञानिक तरीके से मधुमक्खी पालन, परागणक संरक्षण तथा किसानों की आय में बढ़ोतरी करने में लगाएं। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस के पाहुजा ने प्रतिभागियों से कहा कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में मधुमक्खी पालन के व्यवसाय को अपनाने के लिए किसानों को प्रेरित करें ताकि उनकी आमदनी में बढ़ोतरी हो सके। कीट विज्ञान विभाग की अध्यक्षा एवं कोर्स निदेशक डॉ. सुनीता यादव ने केंद्र द्वारा संचालित की जा रही विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि विभाग द्वारा अब तक 38 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं, जिनमें देश के विभिन्न राज्यों से लगभग 678 प्राध्यापक, कीट विज्ञान के सामयिक विषयों में प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं।

समापन अवसर पर प्रशिक्षण संयोजक डॉ. दीपिका कलकल, डॉ मनोज कुमार जाट, डा. विजय कुमार मिश्रा तथा विभाग के सभी कीट वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक चेतना	10.12.2025	--	--

देश में 120 मिलियन मधुमक्खी कालोनियां स्थापित करने की क्षमताः डॉ. राजबीर गर्ग

हिसार 10 दिसम्बर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'मधुमक्खियों एवं स्वदेशी परागणकों की जीव विज्ञान, पालन एवं प्रबंधन' विषय पर 21 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम (सीएएफटी) का समापन हुआ। इस प्रशिक्षण में देश के विभिन्न नौ राज्यों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। समापन समारोह में विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ राजबीर गर्ग मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित रहे। डॉ. राजबीर गर्ग ने अपने सम्बोधन में कहा कि हमारे देश में मधुमक्खी पालन की अपार संभावनाएं हैं, क्योंकि लगभग 70 प्रतिशत पुष्प संसाधन अभी भी उपयोग में नहीं लाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश में 120 मिलियन मधुमक्खी कालोनियां स्थापित करने की क्षमता है। मधुमक्खी पालन के लिए वर्तमान में 3.5 मिलियन कालोनियां ही उपलब्ध हैं, जो परागण आवश्यकताओं की दृष्टि से अत्यंत कम है। उन्होंने बताया कि परागण से प्राप्त अप्रत्यक्ष लाभ, शहद और मोम के मूल्य से 10 से 15 गुना अधिक होते हैं। उन्होंने प्रतिभागियों से आह्वान करते हुए कहा कि वे यहां अर्जित ज्ञान का उपयोग वैज्ञानिक तरीके से

मधुमक्खी पालन, परागणक संरक्षण तथा किसानों की आय में बढ़ोतरी करने में लगाएं। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस के पाहुजा ने प्रतिभागियों से कहा कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में मधुमक्खी पालन के व्यवसाय को अपनाने के लिए किसानों को प्रेरित करें ताकि उनकी आमदनी में बढ़ोतरी हो सके। कीट विज्ञान विभाग की अध्यक्षा एवं कोर्स निदेशक डॉ. सुनीता यादव ने केंद्र द्वारा संचालित की जा रही विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि विभाग द्वारा अब तक 38 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं, जिनमें देश के विभिन्न राज्यों से लगभग 678 प्राध्यापक, कीट विज्ञान के सामयिक विषयों में प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं। समापन अवसर पर प्रशिक्षण संयोजक डॉ. दीपिका कलकल, डॉ मनोज कुमार जाट, डा. विजय कुमार मिश्रा तथा विभाग के सभी कीट वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

	चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	10.12.2025	--	--

किसान खेती के साथ साथ मधुमक्खी पालन को अपनाकर कमा सकते है मुनाफा: डॉ. राजबीर गर्ग

हिसार (सच कहूँ/मुकेश)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में ह्यमधुमक्खियों एवं स्वदेशी परागणकों की जीव विज्ञान, पालन एवं प्रबंधनह्व विषय पर आयोजित 21 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन हुआ। इसमें देश के नौ राज्यों के प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कहा कि भारत में मधुमक्खी पालन की असीम संभावनाएं हैं। देश में 3.5 मिलियन मधुमक्खी कालोनियां उपलब्ध हैं, जबकि 120 मिलियन कालोनियां स्थापित की जा सकती हैं। उन्होंने कहा कि परागण से होने वाला लाभ शहद और मोम की तुलना में 10-15 गुना अधिक होता है। विशिष्ट अतिथि डॉ. एस. के. पाहुजा ने किसानों की आय बढ़ाने हेतु मधुमक्खी पालन को बढावा देने पर जोर दिया। कोर्स निदेशक डॉ. सुनीता यादव ने बताया कि विभाग अब तक 38 प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से 678 विशेषज्ञों को प्रशिक्षित कर चुका है। अंत में प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष न्यूज	10.12.2025	--	--

देश में 120 मिलियन मधुमक्खी कालोनियां स्थापित करने की क्षमता : डॉ. राजबीर गर्ग

-पाठकपक्ष न्यूज-

हिसार, 11 दिसम्बर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'मधुमक्खियों एवं स्वदेशी परागणकों की जीव विज्ञान, पालन एवं प्रबंधन' विषय पर 21 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम (सीएएफटी) का समापन हुआ। इस प्रशिक्षण में देश के विभिन्न नौ राज्यों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। समापन समारोह में विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ राजबीर गर्ग मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित रहे। डॉ. राजबीर गर्ग ने अपने सम्बोधन में कहा कि हमारे देश में मधुमक्खी पालन की अपार संभावनाएं हैं, क्योंकि लगभग 70 प्रतिशत पुष्प संसाधन अभी भी उपयोग में नहीं लाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश में 120 मिलियन मधुमक्खी कालोनियां स्थापित करने की क्षमता है। मधुमक्खी पालन के लिए वर्तमान में 3.5 मिलियन कालोनियां ही उपलब्ध हैं, जो परागण आवश्यकताओं की दृष्टि से अत्यंत कम है। उन्होंने बताया कि परागण से प्राप्त अप्रत्यक्ष लाभ, शहद और मोम के मूल्य से 10 से 15 गुना अधिक होते हैं। उन्होंने प्रतिभागियों से आह्वान करते हुए कहा कि वे यहां अर्जित ज्ञान का उपयोग वैज्ञानिक तरीके से मधुमक्खी पालन, परागणक संरक्षण तथा किसानों की आय में बढ़ोतरी करने में लगाएं। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस के पाहुजा ने प्रतिभागियों से कहा कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में मधुमक्खी पालन के व्यवसाय को अपनाने के लिए किसानों को प्रेरित करें ताकि उनकी आमदनी में बढ़ोतरी हो सके। कीट विज्ञान विभाग की अध्यक्षा एवं कोर्स निदेशक डॉ. सुनीता यादव ने केंद्र द्वारा संचालित की जा रही विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। समापन अवसर पर प्रशिक्षण संयोजक डॉ. दीपिका कलकल, डॉ मनोज कुमार जाट, डा. विजय कुमार मिश्रा तथा विभाग के सभी कीट वैज्ञानिक उपस्थित रहे।